बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम.यू.)

स्नातक (प्रथम खण्ड), पेपर - II
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश

डॉ. सुभाषचन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक 25-07-2020

बौद्ध और न्याय की प्रमाण व्यवस्था :

भारतीय दर्शन में प्रमाण उसे कहते हैं, जो सत्य ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करे। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो, उसे प्रमाण कहते हैं। प्रमाण व्यवस्था का अर्थ है प्रत्येक प्रमाण का अपना एक दायरा/क्षेत्राधिकार होता है, जो अन्य प्रमाण के दायरे/क्षेत्राधिकार से अलग है। बौद्ध दर्शन भी प्रमाण व्यवस्था के अन्तर्गत यह मानता है कि प्रत्येक प्रमाण का क्षेत्राधिकार अलग है, जबकि प्रमाण संप्लव का अर्थ है विभिन्न प्रमाण एक-दूसरे से व्याप्त हो सकते हैं।

न्याय दर्शन के अनुसार यद्यपि सभी ज्ञान अनुभूति/अनुभव पर आधारित नही होते है फिर भी अधिकांश ज्ञान का आधार अनुभव ही है। विवाद का बिन्दु यह है कि विभिन्न दर्शनों मे प्रमाण के अलग-अलग प्रकार बताए गये है - जैसे कि बौद्ध दर्शन में प्रमाण के दो ही प्रकार स्वीकार किए गए है - प्रत्यक्ष तथा अनुमान, जबकि न्याय दर्शन में प्रमाण के चार प्रकार बताए गए है।

बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार प्रत्यक्ष उसे कहते है, जो कल्पना रहित निभ्रान्त ऐसा ज्ञान हो जिसमें बिल्कुल सन्देह न हो, जबकि न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का होता है - यथार्थ ज्ञान तथा अयथार्थ ज्ञान। वस्तु जैसी है, जब ठीक वैसा ही ज्ञान प्राप्त होता है तो ऐसे ज्ञान को यथार्थ ज्ञान कहते है, किन्तु वस्तु जैसी है, ठीक वैसा ही ज्ञान प्राप्त नही होता तो ऐसे ज्ञान को अयथार्थ ज्ञान कहा जाता है।

बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम.यू.)

स्नातक (प्रथम खण्ड), पेपर-I
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश

डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक 25-07-2020

बौद्ध दर्शन के सम्प्रदाय :

महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में बँट गया। प्रथम हीनयान एवं द्वितीय महायान। हीनयान को थेरवाद भी कहा जाता है। हीनयान में बौद्ध धर्म का प्राचीन रूप पाया जाता है। दोनों सम्प्रदायों के साथ भिन्न धाराएँ विकसित हुई। इनमें हीनयान से सम्बद्ध वैभाषिक व सौत्रान्तिक तथा महायान से सम्बन्धित योगाचार व माध्यमिक है। इनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है -

1. वैभाषिक - वैभाषिक का एक अन्य नाम 'सर्वास्तिवाद' है वैभाषिक का मानना है कि जगत की समस्त वस्तुओं की सत्ता है। वैभाषिक चित्त और बाह्य वस्तुओं के अस्तित्व को स्वीकार करते है।

2. सौत्रान्तिक - इसके प्रतिपादक कुमारलाल थे। सूत्रान्तों के प्रमाण मानने के कारण ये सौत्रान्तिक कहलाए। सौत्रान्तिक चित्त व बाह्य जगत दोनो की सत्ता को मानते है।

3. योगाचार - इसे विज्ञानवाद भी कहा जाता है। मैत्रेयनाथ को इसका संस्थापक माना जाता है। इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि केवल विज्ञानों की ही सत्ता है, बाह्य सत्ता की कोई सत्ता नही है।

4. माध्यमिक - इसे शून्यवाद भी कहा जाता है। आचार्य नागार्जुन को इसका संस्थापक माना जाता है। उसने शून्य को ही एकमात्र तत्व घोषित किया, यद्यपि उसने शून्य का विशिष्ट अर्थ किया।